आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 4 अंक : 3 बीकानेर, नवम्बर, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

ग्राम-2016 में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों!

खेती–बाड़ी और पशुपालन हमारे आर्थिक जीवन का एक प्रमुख स्तंम्भ है। मानसून आधारित खेती की अनियमितता की स्थिति में पशुधन ने सदैव हमारा साथ दिया है, यह हमें भली–भांति मालूम है। सूचना क्रान्ति के युग और बदलते परिवेश में गांव भी अछूते नहीं हैं। अतः हमें वैश्विक सोच के अनुरूप अपनी कार्य संस्कृति को विकसित करना होगा। राजस्थान–सरकार द्वारा आगामी 9,10 व 11 नवम्बर, 2016 को जयपुर में ''ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट–2016'' का विशाल आयोजन हमारे लिए एक सुनहरा अवसर है। देश–दुनिया में कृषि, बागवानी और पशुपालन के क्षेत्र में हो रहे नित–नए बदलावों और जरूरतों को देखने और समझने का एक मौका हमें मिलेगा। स्टार्ट–अप इंडिया के माध्यम से पहली बार स्टार्ट अप को मान्यता देकर युवाओं में नवाचार तथा उद्यमिता को प्रोत्साहन मिल रहा है। माननीय प्रधानमंत्री भारत–सरकार का मिशन है कि वर्ष 2022 तक फॉर्म से होने वाली आय को दुगुना करना है। राजस्थान सरकार ने भी इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपनी नीति में फॉर्म की आय बढ़ाने के लिए आधार भूत ढांचा और तकनीकी का समावेश किया है। इसके लिए राज्य में फसलोपरान्त होने वाले नुकसान को कम करना, खेतिहर उद्योगों को बढ़ावा और खेती–पशुपालन से गुणवत्तापूर्ण उत्पादन उपभोक्ताओं तक पहुंचाना ताकि कृषकों–पशुपालकों को पूरी लागत प्राप्त हो सके। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ''ग्राम–2016'' का आयोजन किया जा रहा है। इसमें किसान और पशुपालकों के सशक्तिकरण के लिए नई तकनीकी और फॉर्म प्रेक्टिसेज से रूब–रू होने, क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और कृषि व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। ग्राम–2016 कृषि और पशुपालन की तमाम गतिविधियों से जुड़े लोगों का अनूठा संगम है। किसान, पशुपालक, शिक्षाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, कृषि व्यावसायिक प्रबंधक और कंपनियां तथा नीति निर्धारक इसमें सम्मिलित होंगे। समारोह में वैज्ञानिक संगोष्ठियां, संवाद, उन्नत तकनीकों के प्रदर्शनी स्टॉल, उन्नत पशुधन का प्रदर्शन, क्षमता निर्माण के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय कृषि में सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को साझा करने, सार्वजनिक, निजी सहभागिता और कृषि में परिवर्तन के वैश्विक दृष्टिकोण जैसे विषयों पर बहुत कुछ सीखने और जानने का अवसर मिलेगा। ग्राम–2016 के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी 20 अक्टूबर को राजुवास कुलपति सचिवालय में फैकल्टी सदस्यों और विश्वविद्यालय के अधिकारियों की बैठक के दौरान

मुख्य समाचार

पशुपालन में नवीन तकनीक और नवाचारों का समय : कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने कहा है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अल्प समय में ही मेहनत और लगन से कार्य करके देश के विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में अपना स्थान बनाकर प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। कृषि मंत्री 20 अक्टूबर को राजुवास कुलपति सचिवालय में फैकल्टी सदस्यों और विश्वविद्यालय के अधिकारियों की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इससे राज्य में अपेक्षाएं बढ़ी हैं। देश में राज्य का दूध उत्पादन 10 प्रतिशत है जिसमें बढोतरी की बहुत गुंजाइश है। उन्होंने खुशी जताई कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में विश्वविद्यालय को आवंटित धनराशि से देशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास कार्यों के अच्छे परिणाम आ रहे हैं। कृषि मंत्री श्री सैनी ने कहा कि विश्व में अब नवाचारों का समय है। उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे अच्छी नस्लों में सुधार की नवीन तकनीकों को अपनाने की पहल करें। डी.एन.ए. फिंगर प्रिंट, भ्रूण प्रत्यारोपण और सेक्स सीमन जैसी तकनीकों पर कार्य किया जाना चाहिए तथा पंचगव्य उत्पादों का तकनीकी–चिकित्सकीय प्रमाणीकरण भी किया जाना चाहिए। इससे पूर्व वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्वविद्यालय की शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार गतिविधियों की जानकारी दी।

पशुपालन मंत्री श्री सैनी विश्वविद्यालय द्वारा विकसित टेक्निकल म्यूजियम देखकर अभिभूत हो गए। इस म्यूजियम में पशुओं के विभिन्न मॉडल, पशुचिकित्सा की विभिन्न तकनीकों के मॉडल व ऊंट कंकाल सहित पशुधन उत्पादों को प्रदर्शित किया गया है। कुलपति प्रो. गहलोत ने रंगीन पैनल और छायाचित्रों के द्वारा विश्वविद्यालय की तमाम गतिविधियों का दिग्दर्शन करवाया। इस अवसर पर स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छींपा, महापौर नारायण चौपड़ा, भाजपा देहात अध्यक्ष सहीराम दुसाद, भाजपा शहर अध्यक्ष डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य, अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया भी मौजूद थे।

केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री सी.आर. चौधरी द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र का लोकार्पण

केन्द्रीय खाद्य, उपभोक्ता मामले एवं सार्वजनिक वितरण के राज्य मंत्री श्री सी.आर. चौधरी ने 7 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशु विविधिकरण संजीव मॉडल के प्रशिक्षण केन्द्र का विधिवत लोकार्पण किया। वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर ने राज्य मंत्री को विश्वविद्यालय की गतिविधियों से अवगत करवाया। इस अवसर पर केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. बसन्त बैस, प्रो. एस.सी. गोस्वामी, प्रो. विजय कुमार चौधरी, डॉ. सी.एस. ढाका एवं भाजपा देहात अध्यक्ष व कृषि उपज मंडी समिति के अध्यक्ष श्री सहीराम दुसाद भी उपस्थित थे।

आयुर्वेट नॉलेज सिम्पोजियम–2016

देश की राजधानी नई दिल्ली में 12 अक्टूबर 2016 को पशु विकास से जुड़ी संस्था आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा आयुर्वेट नॉलेज सिम्पोजियम आयोजित किया गया। 'इंटीग्रेटिंग एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक फॉर सस्टेनेबिलिटी' थीम लिए इस आयोजन के केंद्र में सतत् विकास के लिए जल' को उभारा गया। इस विशाल आयोजन में विभिन्न राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, कृषि शोध संस्थानों के निदेशक, विद्यार्थी, मीडियाकर्मी एवं बड़ी संख्या में किसानों ने भी भाग लिया। राजुवास, बीकानेर, माफसू नागपुर, दुवासू, मथुरा एवं आयुर्वेट लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन कृषि राज्य मंत्री श्री पुरुषोत्तम रुपाला द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग राज्य मंत्री श्री गिरीराज सिंह विशिष्ट अतिथि थे। श्री प्रदीप बर्मन, चेयरमैन, आयुर्वेट लिमिटेड, श्री एम.जे. सक्सेना, प्रबंध निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड, प्रो. ए.के. मिश्रा,कुलपति, माफसू, डॉ. के.एम.एल. पाठक, कुलपति, दुवासू, मथुरा और डॉ. अनूप कालरा, कार्यकारी निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड आदि गणमान्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर राजुवास के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन व तकनीक केन्द्र द्वारा प्रकाशित पशु आहार एवं चारा बुलेटिन का भी विमोचन किया गया। राजुवास के निदेशक अनुसंधान प्रो. राकेश राव, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया व लाईजन अधिकारी डॉ. धर्मसिंह मीणा भी उपस्थित थे।

कुलपति प्रो. गहलोत अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा कमेटी में शामिल

भारत सरकार के केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं की समीक्षा कमेटी में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को नामित किया है। यह समिति आई.सी.ए.आर. द्वारा संचालित और वित्तपोषी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं, अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजनाओं और नेटवर्क परियोजनाओं की समीक्षा कर प्रतिवेदन सरकार को प्रस्तुत करेगी। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने कुलपति प्रो. गहलोत को कमेटी में पशु विज्ञान विषय के सदस्य रूप में शामिल किया है।

एमेरिट्स साइंटिस्ट चयन समिति में कुलपति प्रो. गहलोत नामित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को एमेरिट्स साइंटिस्ट स्कीम की सलेक्शन कम स्टैंडिंग कमेटी का सदस्य नामित किया है। घासीलाल कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. दुर्ग सिंह की अध्यक्षता में गठित चयन समिति में 5 सदस्य मनोनीत किये गए हैं। यह कमेटी वैज्ञानिकों को एमेरिट्स साइंटिस्ट के चयन और अवधि को निर्धारित करने, संचालित परियोजनाओं की समीक्षा और स्कीम के विभिन्न पहलुओं के बारे में सिफारिशें तैयार कर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष को सौंपेगी।

राज्य सरकार द्वारा वी.यू.टी.आर.सी के लिए डूँगरपुर में 12 बीघा भूमि का आवंटन

राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर के लिए 12 बीघा भूमि का आवंटन किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि जिला कलेक्टर के निर्देश पर डूंगरपुर के खेड़ा कच्छवासा ग्राम पंचायत के ग्राम सुलई में आवंटित भूमि का कब्जा प्राप्त कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र से जनजातीय क्षेत्र के पशुपालक और कृषकों में पशुपालन की नवीन तकनीकी का प्रसार, पशुरोग निदान के साथ विश्वविद्यालय की अनुसंधान सेवाओं का लाभ सीधे तौर पर मिल सकेगा। इस केन्द्र में 3 विषय विशेषज्ञों की सेवाओं के साथ पशुचिकित्सा की रोग निदान प्रयोगशालाओं की स्थापना करके पशुचिकित्सा सेवाओं को प्रभावी तरीके से लागू किया जाएगा। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जिले के पशुपालक–कृषकों के आर्थिक उन्नयन के लिए स्वस्थ पशु और उनसे उत्पादन को बढ़ाने के तौर–तरीकों के बारे में शिक्षित–प्रशिक्षित किया जाएगा। गांव और जिले के सुदूर क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र दिवस, प्रदर्शनियां और पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर पशुपालकों को लाभान्वित किया जाएगा।

वेटरनरी कॉलेज, नवानियां-वल्लभनगर में मारवाड़ी घोड़ियों में कृत्रिम विधि द्वारा गर्भाधान शुरू

वेटरनरी कॉलेज, नवानियां में मारवाड़ी घोड़ियों में कृत्रिम गर्भाधान विधि द्वारा गर्भाधान शुरू किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय अश्व प्रजनन केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार उच्च नस्लीय मारवाड़ी घोड़ों का वीर्य उपलब्ध कराया जा रहा है। अश्व घोड़ीपालक इस तकनीक का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। संस्था के अधिष्ठाता डॉ. राजेन्द्र कुमार नागदा ने अवगत कराया कि यह सेवा नि:शुल्क है जिसे मारवाड़ी अश्व की नस्ल का सुधार एवं संरक्षण होगा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 5, 6, 7, 15, 19 अक्टूबर को गांव कनवारी, गोगासर, बिनादेसर, देपालसर, ढाणी रघुनाथपुर एवं सालासर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों तथा 14 अक्टूबर को गांव देपालसर में कृषि वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 195 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 186 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 5–6 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में तथा 7–12, 18, 19 एवं 21 अक्टूबर को गांव बीरमाना, मोकलसर, मन्जुवास, एवं खाखरवाली जोरी गांवो में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 186 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 10, 13, 17 एवं 19 अक्टूबर को गांव मांड़वा, मूंगथला, जावल एवं अणगौर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नूं द्वारा 3, 4, 5, 6, 13 एवं 20 अक्टूबर को गांव गेनाना, मालगांव, सिकराली, टिपनी, ढ़ींगसरी एवं दुजार गांवो में तथा 15 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 158 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 14, 18 एवं 22 अक्टूबर को गांव खिंयरा, भादवां, उदेसिया एवं डूडीवाली गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों ने भाग लिया।

डूंगरपुर द्वारा महिला पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 3, 5, 7, 10, 13 एवं 15 अक्टूबर को गांव पाटियों का बांगा, पाड़लीबसिया, पारड़ा मोरू, डोबारियों का ओड़ा, धर्मपुरी एवं नागरिया पंचेला में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 57 महिला पशुपालकों सहित 124 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 3, 4, 10, 18, 19, 20, 22 एवं 27 अक्टूबर को गांव नाहरौली, सैंमली, नगला मैथना, पापडा, श्शक्करपुर, कलसाड़ा, मालपुरा एवं उदाका गांवो में तथा दिनांक 17 एवं 21 अक्टूबर को केन्द्र में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 208 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, अजमेर द्वारा 208 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 10, 14, 15, 17, 18, 19 एवं 20 अक्टूबर को गांव ताजपुरा, बवाईचा, सिंरोज, भीमड़ावास, खेड़ी, पारा, देराठु एवं भैरूंखेड़ा.गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 208 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 7, 13, 17, 19 एवं 20 अक्टूबर को गांव बोराखुंडी, कारोड़ा, शिवपुरी, देवीरनिया, देवपुरा एवं नूरपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 7, 13, 17, 18, 19, 20 एवं 24 अक्टूबर को गांव रंगपुर, मंडाप, गणेशखेड़ा, जोरावरपुरा, कुराड़िया खुर्द, गांवड़ी, तालाब एवं घटोलिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 262 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा केन्द्र द्वारा 193 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 13, 14, 15, 17, 20 एवं 21 अक्टूबर को गांव श्रीपुरा, बरीलिया, सिंहपुर, छापरी, निम्बाहेडा तथा बुल–बोंड गांवो में तथा दिनांक 19 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7, 14, 15, 17 एवं 19 अक्टूबर को गांव करीमपुर, रूपीसपुर, गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 238 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7, 10, 20, 24, 26 एवं 28 अक्टूबर, को गांव रामगढ़, फेफना, जसाना, उज्जलवास, परलिका में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालन प्रशिक्षण शिविर/गोष्ठी तथा 13 एवं 17 अक्टूबर को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 205 कृषक एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

डाईयां गांव में 45 पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीकी केन्द्र द्वारा 15 अक्टूबर को डाईयां गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए आदर्श गांव डाईयां में 45 पशुपालकों को जैविक पशुधन (देशी) उत्पाद तकनीक विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. आर.के. बेरवाल ने पशुपालकों को जैविक पशुपालन के लाभ एवं जैविक पशु उत्पादों के महत्व से संबंधित जानकारी दी। केन्द्र के सह–अन्वेषक डॉ. विजय बिश्नोई एवं डॉ. पंकज मिश्रा ने पशुपालकों को जैविक पशुपोषण और पशुओं के वैज्ञानिक रख–रखाव के बारे में जानकारी दी। शिविर में बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थी।

पशुओं को चारा एवं घास कुट्टी काट कर खिलाएं

पशुओं में प्रायः साबुत चारा ही खिलाने की परम्परा है जबकि पशुओं को चारे की कुट्टी खिलाने से बहुत फायदे होते हैं। विशेषकर अकाल में चारा कुट्टी काट कर खिलाने से पशुपालकों को अधिक लाभ होता है।

कुट्टी काट कर खिलाने से मुख्य लाभ :–

- कुट्टी काट कर खिलाने से साबुत चारे की अपेक्षा पशुओं को कम मेहनत करनी पड़ती है एवं पशु आसानी से चबाकर खा सकता है।
- यदि पशुओं को कड़बी मक्का, बाजरा, ज्वार आदि अन्य चारे साबुत खिलाते हैं तो पशु आधा चारा ही खा पाता है। पशु पत्ते तो खा जाते हैं एवं डन्ठल (राडा) छोड देते हैं व आधा मल–मूत्र आदि से खराब कर देते हैं। कुट्टी काटकर खिलाने से चारा कुण्डी या टोपला में रखकर खिलाया जाता है जिससे चारा खराब नहीं होता है और चारे का पूर्ण सदुपयोग हो जाता है। इस तरह से चारे की बचत होती है। साबुत चारा जिससे एक पशु पलता है उसे कुट्टी काट खिलाने से दो से तीन पशु आराम से पल जाते हैं।
- चारे की कुट्टी में पशु को देने वाले पशु आहार (बांटा) तथा खनिज लवण आदि को पूर्व में मिलाकर खिलाने से पशु चारा चाव से खाता है तथा पशु को सन्तुलित आहार मिल जाता है इससे पशु की उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी होती है।
- हरे चारे की कुट्टी को सूखे चारे की कुट्टी में या खाखले में मिलाकर खिलाया जा सकता है, इससे हरे व सूखे चारे का पूर्ण उपयोग होता है।
- कुट्टी काटकर खिलाने से पशु को पूर्ण सन्तुष्टि हो जाती जिससे उनका उत्पादन बढ़ जाता है।
- कुट्टी किया हुआ चारा खाने से पशु की पाचन क्रिया अच्छी रहती है जिससे उसकी उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता बढ़ती है।
- कुट्टी काटकर चारे को रखने में भी सहूलियत रहती है। कम जगह में अधिक चारे का सुरक्षित भण्डारण किया जा सकता है क्योंकि साबुत चारा अधिक जगह घेरता है। बरसात एवं लावारिस पशुओं से भी चारे को खराब होने से बचाया जा सकता है।
- बाजार में चारे की कुट्टी काटने की हाथ से चलाने वाली एवं बिजली की मोटर अथवा इंजन से चलने वाली मशीन उपलब्ध है। पशुपालक भाई इसे अपनाकर पशुपालन को लाभकारी बना सकते हैं।

डॉ. सुदीप सोलंकी, **(मो.9950854959), सहायक आचार्य, वीयूटीआरसी, सिरोही**

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही जिले के कोलर ग्राम में वर्ष 2014 में स्थापित किया गया। यह केन्द्र सिरोही शहर से 8 कि.मी. दूर जयपुर की ओर जाने वाले राजमार्ग संख्या–14 पर कृषि विज्ञान केन्द्र के समीप स्थित है। केन्द्र पर कृषक–पशुपालकों के लिए एक प्रशिक्षण हॉल, एक आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला और एक पुस्तकालय कक्ष है। इसके अतिरिक्त एक व्याख्यान कक्ष, तीन कम्प्यूटरयुक्त कक्ष, एक स्टोर और कर्मचारी कक्ष भी बने हुए हैं। केन्द्र के वैज्ञानिक और पशुचिकित्सा विशेषज्ञ जिले के पशुपालक और कृषकों को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में नवाचारों, नवीन तकनीक का प्रचार–प्रसार कर पशुपालन एवं पशुओं के उत्पादन को बढ़ावा देकर पशुओं के वैज्ञानिक लालन–पालन के सम्बन्ध में प्रशिक्षणों का आयोजन कर जानकारी प्रदान करते हैं। पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन के लिए तथा स्वस्थ पशु और उनके उत्पादन में वृद्धि के बारे में शिक्षित–प्रशिक्षित करते हैं। वर्तमान में केन्द्र पर एक प्रभारी अधिकारी, पशुचिकित्सा विशेषज्ञ सहित एक पशुधन सहायक और दो सहायक कर्मचारी की सेवायें उपलब्ध हैं। वैज्ञानिकों द्वारा गांवों का प्रारम्भिक सर्वे पश्चात प्रशिक्षण और पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भी किया जाता है। केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों में वैज्ञानिक–पशुपालक वार्ता, विचार गोष्ठी का आयोजन करके पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में नवाचारों के बारे में भी प्रशिक्षण देना है। गत दो वर्षो में केन्द्र द्वारा विभिन्न गांवों में 33 प्रशिक्षण शिविरों एवं 7 पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर 994 युवा, महिलाओं, कृषकों और पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुंह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर, बांसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, बीकानेर, दौसा, अलवर, अजमेर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	पाली, सिरोही, सवाईमाधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू
चेचक/माता रोग	ऊंट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, टौंक, बूंदी, राजसमन्द, सीकर
न्यूमोनिक पाश्चूरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, अलवर, टौंक, जालोर, जयपुर, सीकर, बीकानेर
फड़किया	बकरी, भेड़	टोंक, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बांसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर
भेड़ो में गर्भपात	भेड़	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू
बबेसियोसिस, थाईलेरिओसिस	गौवंश	बीकानेर, धौलपुर, बूंदी, चूरू, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि, पर्ण–कृमि एवं फीता–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊंट	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, हनुमानगढ़, बीकानेर, सीकर, अलवर, चूरू

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

मुर्गियों में रानीखेत रोग का प्रभाव और उपचार

रानीखेत मुर्गीपालन की सबसे गंभीर और संक्रामक विषाणुजनित बीमारियों में से एक है। रानीखेत रोग पक्षियों जैसे मुर्गी, टर्की, बतख, कोयल, तीतर और कबूतर आदि में देखने को मिलती है लेकिन यह रोग मुर्गियों को प्रमुख रूप से प्रभावित करता है।

कारण:- इस रोग का कारक विषाणु होता है जो कि एक आर. एन.ए. विषाणु है।

संचरण:- संक्रमित पक्षियों के मल, दूषित वायु और उनके दूषित पदार्थ (दाना, पानी, उपकरण, कपड़े आदि) के स्पर्श से फैलता है। इस रोग से 30–40 प्रतिशत तक मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है। अगर रोग गंभीर होता है तो 100 प्रतिशत तक मुर्गियों की मृत्यु हो सकती है। मुर्गियों में इस रोग की उष्यापन अवधि 2 से 4 दिन तक होती है।

रोग के लक्षण:- शुरूआती अवस्था में छींके और खांसी आना शुरू होती है। सांस नली के प्रभावित होने से सांस लेने में तकलीफ होती है। पाचन तंत्र प्रभावित होने पर संक्रमित मुर्गियां पतला एवं हरे रंग का डायरिया करने लगती है। कभी–कभी शरीर के किसी हिस्से को लकवा मार जाता है। प्रभावित मुर्गियां आकाश की ओर देखती हैं तथा मुर्गियों का दिमाग प्रभावित होने पर शरीर का संतुलन लड़खड़ाता है।

उपचार:- टीकाकरण ही एक मात्र उपचार है। टीकाकरण स्वस्थ पक्षियों में सुबह के समय करना चाहिए और संक्रमित मुर्गियों को अलग कर देना चाहिए। सबसे पहले एफ–वन लाइव या लसोटा स्ट्रेन वेक्सीन की खुराक 4 से 5 दिन पर देनी चाहिए और दूसरी आर.बी. स्ट्रेन की बूस्टर डोज 9–12 हफ्ते की आयु पर पक्षियों की आंख और नाक से देनी चाहिए। मुर्गी–फार्म बड़े स्तर पर है तो वैक्सीन को पानी के साथ मिलाकर भी दे सकते हैं।

रोकथाम और नियंत्रण:- वर्तमान समय में इस रोग को जड़ से खत्म करने की कोई दवा नहीं है। इसके नियंत्रण के लिए मुर्गी घर के दरवाजे के आगे पैर धोने के लिए उचित व्यवस्था करनी चाहिए। रोग से प्रभावित पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग रखना चाहिए। बाहरी लोगों का फार्म के अंदर प्रवेश वर्जित होना चाहिए। दो मुर्गी फार्मों के बीच की दूरी कम से कम 100–140 मीटर रखनी चाहिए तथा रोग से मरे हुए पक्षियों को गड्ढे में दबा देना या जला देना चाहिए।

डॉ. नरेश कुमार शर्मा
सीवीएएस., बीकानेर (मो. 9694591068)

सर्दियों में नवजात पशुओं की देखभाल कैसे करें

नवम्बर माह शुरू होते ही सर्दी का अहसास होने लगता है और खास कर सुबह और शाम के समय ठण्ड काफी बढ़ जाती है। सर्दी शुरू होते ही विशेष रूप से भैसों व भेड़–बकरियों में ब्याहने की दर काफी ज्यादा रहती है और इस प्रकार नवम्बर माह के बाद इन पशुओं के नवजातों की संख्या में काफी बढ़ोतरी होती है। ये नवजात और छोटे पशु सर्दी के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं और उन्हें सर्दी, बुखार व न्यूमोनिया होने की पूरी संभावना रहती है। अतः पशुपालक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने नवजात पशुओं की देखभाल अच्छी प्रकार से करें ताकि उन्हें सर्दी, बुखार, न्यूमोनिया से बचाया जा सके। सर्दी से ग्रसित नवजात की यदि उचित देखभाल न की जाये तो कुछ ही समय में उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

पशुपालक को चाहिए कि जन्म के तुंरत बाद नवजात के नाक–मुंह से झिल्ली व अन्य तरल पदार्थ को तुंरत साफ कपड़े से हटा दें ताकि नवजात को सांस लेने में परेशानी न हो। नवजात की नाल को साफ धागे से बांध कर टिंक्चर अथवा किसी भी एंटीसेप्टिक से साफ कर देना चाहिए। ऐसा करने से नाल से अत्याधिक खून नहीं बहता है और नवजात को संक्रमण से भी बचाया जा सकता है। नवजात को जन्म के तुरंत बाद खीस अवश्य पिलायें। इसके साथ यह बात जरूर ध्यान में रखें कि खीस की मात्रा इतनी हो कि नवजात को दस्त न हो और वह ठीक से खीस को पचा सके। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे को कम मात्रा में बार–बार मां का दूध पिलाया जाये। शुरूआती दिनों में नवजात को मां के साथ ही रखना चाहिए। नवजात को सुबह व शाम के समय छप्पर या पशुघर में रखें। सर्दी के समय यह बात याद रखनी चाहिए कि पशु घर में किसी भी स्थिति में धुंआ न करें। धुंआ होने से पशुओं को सांस संबंधी रोग होने से तकलीफ होती है और उसकी मृत्यु भी हो सकती है। नवजात पशुओं को दिन के समय सूर्य की रोशनी की भी आवश्यकता होती है अतः उन्हें कुछ समय के लिए खिली धूप में भी जरूर रखें। धूप में रखने से नवजात को कुछ जरूरी विटामिन मिलते हैं जिससे उसकी शारीरिक वृद्धि बेहत्तर होती है। सर्दी के मौसम में पशुओं की शारीरिक वृद्धि के लिए अन्य मौसम की तुलना में ज्यादा ऊर्जा की जरूरत होती है अतः पशुपालक को चाहिए कि नवजात व बढ़ते हुए पशुओं के खानपान का विशेष ध्यान रखें। साथ ही नवजात पशु के रहने के स्थान की पर्याप्त साफ–सफाई बहुत आवश्यक है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी बकरी वंश को पहचानें > जमनापरी बकरी: गौरव प्रदेश का

भारत में जमनापरी नस्ल की बकरी मुख्यतः मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, तमिलनाडू तथा कर्नाटक में पाई जाती है। राजस्थान में यह नस्ल भरतपुर में पाई जाती है। इस नस्ल का नाम जमनापरी, इसका वास यमुना नदी के कारण पड़ा। यह नस्ल मांस और दूध दोनों के लिए पाली जाती है। उत्तल नाक तथा थनों में बालों की अतिरिक्त वृद्धि इसकी मुख्य पहचान है। उत्तल नाक के कारण स्थानीय लोग इसे तोतापरी नाम से भी जानते हैं। इसका रंग मुख्यतया सफेद होता है तथा लाल रंग के धब्बे सिर व गर्दन पर पाये जाते हैं। इसके कान भी लम्बे, चपटे तथा लटके हुए होते हैं जिनकी लम्बाई 25 सेमी. तक होती है। यह भारत में पाई जाने वाली सबसे लम्बी बकरी की नस्ल है। नर व मादा दोनों में तलवार के आकार के सींग पीछे तथा ऊपर की ओर मुड़े होते हैं। इनका अयन गोल तथा शंक्वाकार थनों के साथ पूर्ण विकसित होता है। यह औसतन 2 किलो दूध प्रतिदिन देती है तथा 7–8 माह में फिर ब्याह जाती हैं एक साथ तीन बच्चों का जन्म आम घटना है। इसमें गर्भाधान की दर बहुत अधिक होती है। नर का औसत शारीरिक भार 60 किलो तथा मादा का 50 किलो होता है। जमनापरी के मांस में कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। सर्दियों में अधिकतर समय चराई में व्यतीत करती है (लगभग 90 प्रतिशत) और जमीनी चराई के बजाय पेड़ों की पत्तियों, झाड़ियों तथा घास के शीर्ष को खाना पसन्द करती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता, अनुकूलता तथा उच्च वृद्धि दर इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं जो बकरी पालन में उच्च बाजार मूल्य को निर्धारित करते हैं तथा किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय साबित हो सकता है।

सफलता की कहानी > बेरोजगारों के लिए नजीर बना : रामूराम

हमारे राज्य में पशुपालन व्यवसाय के लिए आदर्शतम स्थितियां मौजूद हैं। यह कम पूंजी लागत और मेहनत में एक भरोसमन्द व्यवसाय है। राज्य के कृषकों को कमजोर मानसून और सूखे के हालात में पशुपालन ने सदैव एक सम्बल प्रदान किया है। नागौर जिले के मालगांव निवासी रामूराम जाट ने इसे अपनाकर समझदारी का परिचय दिया है। 45 वर्षीय रामूराम जाट के पास 35 बीघा कृषि योग्य भूमि है लेकिन वर्षा आश्रित कृषि में पैदावार कम होने के कारण पशुपालन को आजीविका के रूप में अपनाकर इनको आर्थिक सफलता प्राप्त हुई। इन्होंने पशुपालन की शुरूआत 20 भेड़ों व 2 बकरियों से की। वर्तमान में इनके पास 100 भेड़ें , 10 बकरियां हैं। प्रति वर्ष 20–30 मेंढ़े व मेमनों का जन्म होता है। प्रति मेंढ़ा 700 से 1000 रू. में विक्रय करते हैं। ऊन को 15–20 रू. प्रति किलो के भाव से बेचते हैं। इस प्रकार पशुपालन से इनको 50 हजार रू. की अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। वे विगत 2 वर्षों से वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया से जुड़े हुए हैं और उन्नत व वैज्ञानिक पशु प्रबंधन, पोषण, टीकाकरण, डि–वर्मिगं आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसका प्रभाव, उत्पादन व पशु स्वास्थ्य पर परिलक्षित है। रामूराम भूमिहीन व कम कृषि पैदावार वाले किसानों व अन्य पशुपालकों को पशुपालन के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं। पशुपालन से आर्थिक स्वावलम्बन की यह एक उत्कृष्ट मिसाल हैं। बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिए भी वे एक आदर्श हैं।

सम्पर्क– रामूराम जाट, मालगांव, नागौर (मो. 9983321733)

निदेशक की कलम से...

पशुओं की प्रजनन संबंधी जानकारी होना अधिक महत्वपूर्ण है

पशुओं में बांझपन और प्रजनन संबंधी विकार पशुपालकों के लिए नुकसानदायक होते हैं। प्रजनन के अभाव में उत्पादन और पशुओं का स्वास्थ्य प्रभावित होता है जिसका खामियाजा पशुपालकों को आर्थिक हानि के रूप में उठाना पड़ता है। इन कारणों से गाय और भैंस का पालन बहुत कम आय या नुकसान का होता जा रहा है। गाय से 13–14 माह में एक बच्चे का उत्पादन होना ही चाहिए। यह तभी संभव है जब प्रजनन चक्र नियमित और पूरी तरह सुरक्षित हो। पशु के योनि और बच्चेदानी में संक्रमण या बाहर आने की स्थिति में पशु गर्भधारण नहीं कर पाते हैं । ओवेरियन सिस्ट, ताव में नहीं आना और फुराव करने की स्थिति में भी बांझपन हो सकता है। चिकित्सक की सलाह और उपचार लेने से ये समस्याएं दूर की जा सकती हैं। प्रजनन संबंधी विकारों के चलते भी पशु ग्याभिन नहीं हो पाते। प्रजनन कब करें! इसकी जानकारी होना बहुत जरूरी है। वयस्क और स्वस्थ पशु ही प्रजनन योग्य होता है। प्रजनन योग्य बछिया गर्भाने (पाली में आना) लगती है और गर्भित नहीं होने पर इसकी पुनर्रावृति हर 18 से 21 दिन बाद होती है। पाली में रहने की अवधि लगभग 18 से 24 घण्टे होती है। गाय के पाली में आने के लक्षणों में गाय का चौकस या उत्तेजित होना, रंभाना, सांड के पास रहना, अन्य गायों पर चढ़ना, योनि से पारदर्शक चिपचिपा पदार्थ का स्त्रावण, योनि पर सूजन व अन्दर से लाल हो जाना, बार–बार पेशाब का आना व अनियमित खुराक हो जाना प्रमुख हैं। गर्मी समाप्त होने के बाद गाय के अण्डाशय से 12 घंटे बाद अंडा निकलता है तथा गाय की जननेन्द्री में सांड के वीर्य के शुक्राणु लगभग 24 घण्टे तक सक्रिय रहते हैं। अतः पशु को गर्मी समाप्त होने के 6 घण्टे पहले यानि मद में आने के 12 घंटे पश्चात प्रजनन करवाया जाए तो गर्भित होने की 90 प्रतिशत संभावना रहती है। आप इन बातों का ख्याल रख कर अपने पशु को उत्पादक बनाए रख सकते हैं। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **नवम्बर 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. कर्नल (डॉ.) ए. के. गहलोत, 9414138211 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	प्रसार शिक्षा में राजुवास की अनूठी पहल : धीणे री बात्यां	03.11.2016
2	प्रो. जी.एस. मनोहर 9413659310 अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन पाठ्यक्रम से स्वरोजगार के अवसर	10.11.2016
3	प्रो. आर. के. सिंह निदेशक पी.एम.ई, राजुवास, बीकानेर	पशुपालन उत्थान में राजुवास के अनुसंधान कार्यक्रम	17.11.2016
4	प्रो. आर.के. धूड़िया, 9414283388 निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	कृषि और पशुपालन का साथ बनाम सतत विकास	24.11.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया